REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2024

मृदुला गर्ग के उपन्यास साहित्य में आत्मसम्मान व स्वाबलम्बन के लिए स्त्री संघर्ष का अध्ययन

रीनो सिंह
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. एस.एल. मिश्रा
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
शासकीय शहीद केदारनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मऊगंज (म.प्र.)

सारांश –

मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यासों और कहानियों में स्त्री की सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक स्थिति पर गहरी विचारधारा प्रकट की है। उनका लेखन विशेष रूप से स्त्री के आत्मसम्मान और स्वाबलम्बन के संघर्ष को चित्रित करता है। उनकी रचनाएँ न केवल स्त्री के जीवन के कठिन पहलुओं को उजागर करती हैं, बल्कि समाज में स्त्री के स्थान को चुनौती भी देती हैं। मृदुला गर्ग के उपन्यासों में स्त्री का संघर्ष अपनी पहचान, सम्मान और स्वावलंबन की प्राप्ति के लिए निरंतर जारी रहता है। ये उपन्यास स्त्री को पारंपरिक सामाजिक बंधनों से बाहर निकलने, अपने आत्मसम्मान को बनाए रखने और स्वतंत्रता की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं, उपन्यासों में जैसे "चक्रव्यूह" और "अच्छा आदमी"। मृदुला गर्ग ने स्त्री के जीवन में व्याप्त उन चुनौतियों को दिखाया है जिनका सामना उसे समाज, परिवार और रिश्तों में प्रचलित भेदभाव और उत्पीड़न से करना पड़ता है।

मुख्य शब्द – मृदुला गर्ग, सामाजिक, मानसिक, भावनात्मक, आत्मसम्मान एवं स्वाबलम्बन।

प्रस्तावना –

मृदुला गर्ग के उपन्यासों में स्त्री का आत्मसम्मान और स्वावलंबन उसकी स्वतंत्रता की ओर बढ़ने की कहानी है। मृदुला गर्ग ने समाज में स्त्री के अस्तित्व की महत्ता और उसके संघर्ष को उजागर किया है, जिससे यह सिद्ध होता है कि स्त्री को अपनी पहचान और सम्मान प्राप्त करने के लिए निरंतर संघर्ष करना पड़ता है। उनके उपन्यास यह बताते हैं कि स्त्री को केवल बाहरी दुनिया से ही नहीं, बल्कि अपनी मानसिकता और सामाजिक परंपराओं से भी मुक्त होना पड़ता है। मृदुला गर्ग का साहित्य स्त्री के आत्मसम्मान और स्वावलंबन के संघर्ष की एक प्रेरणा है, जो समाज के हर क्षेत्र में महिला के समान अधिकारों और स्वतंत्रता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। उनके उपन्यासों में स्त्री की यात्रा न केवल उसकी व्यक्तिगत संघर्षों का चित्रण करती है, बल्कि यह समाज में स्त्री के स्थान को पुनः परिभाषित करने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण योगदान है।

आज भी हमारे देश में समाज पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर आधारित है, यहाँ आज भी पुरूष वर्ग स्त्री को मात्र एक वस्तु समझता है, वह उसकी दृष्टि में इंसान है ही नहीं। वास्तव में पुरूष वर्ग को लगता है कि स्त्री का जन्म मात्र पुरूषों की भोग लिप्सा को पूर्ण करने के लिये ही हुआ है। हमारे समाज की यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति ने स्त्री को सदा ही एकाकीपन, उदासी, घुटन, संत्रास और मानसिक अंर्तद्वन्द्व से घेरे रखा है। बाजार की चमक–दमक से प्रभावित स्त्री न केवल आर्थिक रूप से स्वावलंबी होना चाह रही है बल्कि वह अपने प्रेम जीवन में भी स्वतंत्रता एवं समानता की मांग कर रही हैं। अब तक वह सोचती थी कि प्रेम ही सब कुछ हैं लेकिन आज वह सोचती हैं कि जब पुरूष कमाता हैं तो वह भी क्यों नही पुरूष की तरह पैसा कमाएँ।

वर्तमान समय की सुनि"चित नारियाँ अपनी ि"ाक्षा का उपयोग केवल घर सँभालने बस की पक्षधर बिल्कुल नहीं हैं। वे अपना स्वतंत्र व समाज में ऐसा स्थान चाहती हैं जहाँ उनका सम्मान लैंगिक आधार पर हो बल्कि उनकी योग्यता व काबिलियत के आधार पर। विधाता की अनुपम कृति के रूप मे नारी को सृष्टि का मूल आधार माना गया जिसके अभाव में मनुष्य के अस्तित्व की कल्पना असंभव है। उनके दृढ़ संकल्प एवं आत्मविश्वास की बात को भी नकारा नहीं जा सकता है कि उनकी दृष्टि स्त्री स्वाबलंबन के पक्ष में कितनी अधिक सक्रिय रही है। गुत्थमगुत्था के बीच पलती दीवारों के मायने में उनकी समझदारी की कलम ने समसामयिक व्यवस्था को पछाड़ा है।

आज का साहित्यिक परिदृश्य बहुत चुनौती पूर्ण है। आज कोई विषय, क्षेत्र, प्रयोग, विचारधारा, साहित्य में वर्जित नहीं मानी जाती। प्रयोग की यह स्वतन्त्रता, रचनाकार के लिए वरदान है। वह नए सौन्दर्यशास्त्र का सृजन कर सकता है, नया शिल्प, नई भाषा, नया कथ्य लेकर रचना कर सकता है। चुनौतीपूर्ण माहौल से डर जाओ तो वह वरदान के बजाय अभिशाप बन जाता है। उसी के चलते बहुत से लोग इसे संकट का समय भी बतलाते हैं। स्वाबलंबन का होना जरूरी होता है, उसका आत्मसम्मान और स्वाबलंबन ही समाज में उसको स्थान दिलाता है। यह मृदुला गर्ग की कथा साहित्य की वि"ोषता भी है कि वह स्त्री के भविष्य को लेकर काफी विचारणीय तथ्यों को अपनाकर उसकी पुष्टि अपने विचारपूर्ण अध्ययन में करती हैं, स्वलंबन एवं निर्णायक की भूमिका का निर्वाह करना स्त्री जीवन की प्र"ास्त जिम्मेदारी निभाती है– ''ठीक है, कोि"ा"ा करती हूँ, कर लूंगी मैं, मुझे खूब सारा कुछ काम करना पसंद है, कल ही अखबार में अपील जारी कर देती हूँ, दामिनी ना लड़की की किडनी के ऑपरे"ान के लिए पैसा चाहिए, एवं लोग उसमें डोने"ान दें। हमारे एन.जी.ओ. का नाम होगा तो उन्हें वि"वास रहेगा, उनका पैसा कहीं गलत जगह नहीं जाएगा।''[1] परिवार, परिवेश, स्त्री–समस्या, विमर्श और समस्याओं को लेकर अनुसंधान कार्य आदि विषयों पर आकाशवाणी, दूरदर्शन, जैसे माध्यमों में अपना भाषण दिये हैं। लेखिका का नाम और कर्म दोनों ही साहित्य की दुनिया में वि"ोष स्थान रखते हैं, जिसका परिवे"ागत कथाकर्म में विवचित भी किया है।

विश्लेषण –

हिंदी साहित्य में मृदुला गर्ग का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह एक ऐसी लेखिका हैं जिन्होंने अपने साहित्यिक कार्यों के माध्यम से समाज में स्त्री की भूमिका, उसके अधिकारों और उसके आत्मसम्मान को विशेष रूप से उजागर किया। मृदुला गर्ग के उपन्यास और कहानियाँ न केवल स्त्री के व्यक्तिगत संघर्ष की कहानियाँ हैं, बल्कि वे समाज के उन पितृसत्तात्मक ढाँचों को चुनौती भी देती हैं, जो स्त्री को हमेशा अपने अधिकारों और स्वतंत्रता से वंचित रखते हैं। स्त्री के आत्मसम्मान और स्वावलंबन का प्रश्न विशेष रूप से मृदुला गर्ग के लेखन का केंद्रीय विषय है। उनके उपन्यासों में न केवल स्त्री की संघर्षपूर्ण स्थिति को चित्रित किया गया है, बल्कि यह भी दर्शाया गया है कि किस प्रकार वह अपनी पहचान स्थापित करने, अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने और आत्मसम्मान बनाए रखने के लिए लड़ाई करती ह। यह संघर्ष न केवल बाहरी दुनिया से है, बल्कि अपने परिवार, समाज और मानसिकता से भी है। मृदुला गर्ग के उपन्यासों की विशेषता यह है कि वे स्त्री को एक कमजोर पात्र के रूप में प्रस्तुत नहीं करतीं, बल्कि उन्हें एक साहसी, स्वावलंबी और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में चित्रित करती हैं। मृदुला गर्ग की नायिकाएँ अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं में संघर्ष करती हैं, चाहे वह पारिवारिक, सामाजिक या आर्थिक हो, और अंततः अपने आत्मसम्मान और स्वावलंबन को प्राप्त करने में सफल होती हैं।

मृदुला गर्ग के उपन्यासों में यह दिखाया गया है कि समाज में स्त्री के प्रति पारंपरिक सोच और दृष्टिकोण कैसे उसकी स्वतंत्रता और आत्मसम्मान को बाधित करते हैं। साथ ही, यह भी प्रदर्शित किया गया है कि वह इन बंधनों को तोड़ने के लिए किस प्रकार अपनी क्षमता, मेहनत और समझदारी का प्रयोग करती है। मृदुला गर्ग के साहित्य में स्त्री का संघर्ष, उसकी पहचान की खोज, उसके स्वाभिमान की रक्षा और उसे एक स्वतंत्र, आत्मनिर्भर और समान अधिकारों वाले व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करने की यात्रा है। इसमें हम मृदुला गर्ग के साहित्य के माध्यम से स्त्री के आत्मसम्मान और स्वावलंबन के लिए किए गए संघर्ष का एक गहरा और व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करेंगे। इसके साथ ही हम यह भी समझने का प्रयास करेंगे कि उनके उपन्यासों में स्त्री के संघर्ष को किस प्रकार चित्रित किया गया है और इसके माध्यम से समाज में स्त्री के स्थान पर क्या संदेश दिया गया है।

मृदुला गर्ग के साहित्य की विशेषताएँ :

मृदुला गर्ग का साहित्य विशुद्ध रूप से स्त्री के जीवन की वास्तविकताओं को प्रस्तुत करता है। उनके उपन्यासों और कहानियों में स्त्री का आत्मनिर्भर और स्वावलंबी चित्रण मिलता है, जो कि उस समय के समाज के रूढ़िवादी दृष्टिकोण के लिए चुनौतीपूर्ण था। गर्ग के लेखन में स्त्री को उसके पारंपरिक घरेलू दायित्वों से बाहर एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मृदुला गर्ग के उपन्यासों में महिला पात्रों को समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए निरंतर संघर्ष करते हुए दिखाया गया है। उनका लेखन यह दर्शाता है कि किस प्रकार स्त्री को पारंपरिक और सामाजिक बंधनों के बीच अपने अस्तित्व की पहचान और स्वतंत्रता प्राप्त करनी होती है। मृदुला गर्ग ने यह दिखाया है कि यह संघर्ष सिर्फ बाहरी दुनिया से नहीं, बल्कि अपने भीतर के डर, संकोच और आत्मसंशय से भी होता है। उनकी लेखनी में यह भी देखा जाता है कि समाज में स्त्री को पुरुषों से कमतर समझा जाता है और उसे कई मामलों में अपने स्वाभिमान के लिए लड़ाई करनी पड़ती है। उनके उपन्यासों में यह संघर्ष कड़ी मेहनत, साहस और आत्मविश्वास के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

स्त्री का संघर्ष और स्वावलंबन :

मृदुला गग के उपन्यासों में स्वावलंबन और आत्मसम्मान के लिए स्त्री का संघर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनकी नायिकाएँ समाज की परंपराओं और रुढ़िवादी मानसिकताओं को चुनौती देती हैं और अपनी पहचान स्थापित करने के लिए निरंतर संघर्ष करती हैं। स्वावलंबन का मतलब केवल आर्थिक स्वतंत्रता से नहीं है, बल्कि यह मानसिक और भावनात्मक स्वतंत्रता भी है। गर्ग के उपन्यासों में स्त्री अपनी पहचान की खोज करती है, और इसके लिए वह अपने परिवार, समाज और रिश्तों से स्वतंत्रता की तलाश करती है। मृदुला गर्ग के उपन्यासों में कई बार यह दिखाया गया है कि एक महिला को केवल पारिवारिक जिम्मेदारियों और पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं किया जा सकता। गर्ग की नायिकाएँ अपनी मेहनत और संघर्ष के माध्यम से समाज में अपनी अलग पहचान बनाती हैं। उनकी रचनाओं में, विशेष रूप से 'चक्रव्यूह' और 'अच्छा आदमी', स्त्री के स्वावलंबन की प्रक्रिया को गहराई से चित्रित किया गया है। ये नायिकाएँ पारंपरिक परिवार की संरचना और समाज की अपेक्षाओं को चुनौती देते हुए अपने आत्मसम्मान को बनाए रखने की कोशिश करती हैं।

पारिवारिक और सामाजिक बंधन :

मृदुला गर्ग के उपन्यासों में यह प्रदर्शित किया गया है कि पारिवारिक और सामाजिक बंधन स्त्री के आत्मसम्मान और स्वावलंबन के रास्ते में कितनी बड़ी बाधाएँ डालते हैं। समाज और परिवार में महिलाओं के लिए जो पारंपरिक भूमिकाएँ निर्धारित की गई हैं, वे उनके व्यक्तित्व और स्वतंत्रता के लिए एक निरंतर संघर्ष का कारण बनती हैं। उनकी नायिकाएँ इन बंधनों को तोड़ने के लिए संघर्ष करती हैं। वे यह समझती हैं कि समाज में समानता और स्वतंत्रता की प्राप्ति केवल संघर्ष और साहस के माध्यम से ही संभव है। मृदुला गर्ग ने इस संघर्ष को न केवल भावनात्मक रूप से, बल्कि मानसिक रूप से भी प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों में स्त्री का मानसिक और आंतरिक संघर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उसे अपनी पहचान और स्वावलंबन के मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान करता है।

वर्तमान समय में नारी पुरूष समान सभी अधिकारों, सुविधाओं की प्राप्ति तथा खुली हवा में स्वतन्त्ररूपेण स्वतन्त्रता के आनन्द का अनुभव लेने का अधिकार है। नारी को समाज में गौरवपूर्ण स्थान हासिल करने की अधिकारिणी बनना अति आवश्यक। वर्तमान समय में स्त्री को कमजोर बनाने में उसके परजीवी होने के साथ–साथ समाज की आचार संहिताएं भी जिम्मेदार हैं। स्वावलम्बन उसे इन बेड़ियों से मुक्त करने का एक मजबूत आधार देता है। अक्सर घरेलू औरतों को यह कह–कहकर हीन भावना का ि"ाकार बना दिया जाता है, वे क्या जाने कमाने वाले की तारीफ, तो बस खाली–पीली खाना जानती हैं, कमाएं तो पता चले। उन्हें इस हद तक दब्बू बना दिया जाता है कि वे बाहर अकेली जाने से भी कतराने लगती है। हमे"ाा उनके मन में डर बना रहता है कि कहीं कोई मर्द छेड़ न दें, कहीं कोई बुरी नजर उन्हें देख न ले। ऐसी औरतों के मर्द भी अधिक शक्की होते हैं और वे इस आधार पर हमे"ाा उन्हें पीटते रहते है।

वर्तमान में स्त्री अगर आर्थिक दृष्टि से परिपूर्ण है, उस पर जुल्म नहीं होंगे यदि होंगे भी तो कम होंगे। स्वाबलंबी होने से औरत का स्वाभिमान बढ़त है, उसका आत्मसम्मान आत्मबल भी। साथ ही प्रतिकूल परिस्थितियों, प्रतिबंधों को नकारने की क्षमता भी हासिल कर लेती है, सम संकीर्ण परंपराओं से परे मुक्ति की राह पर चल सकती है। सत्य तो यह परिवे"ा की माँग के कारण उत्पन्न मूल्य, परम्परागत मूल्य को चुनौती देते इस द्वंद्व के उपरांत कोई वैज्ञानिक व तर्कसंगत मूल्य परंपरा में शामिल होता है।

हिन्दी कथा–साहित्य में नारी–विषय का भूमंडलीकरण हो गया है, ग्लोबलाईजेशन एवं बाजारवाद, लिब्रलाइजेशन ने स्त्री लेखन कर्म में सहायता दी, किन्तु असली जमीन तैयार की, उससे प्रभावित तथा निर्मित अन्यान्य विसंगतियों ने। इन्होंने सृजन धर्मिता के लिए बेहतर हरी परन्तु खुरदुरी भूमि तैयार की।

परिणामस्वरूप इनकी रचनाओं में स्त्री आत्मसम्मान के लिए स्वयं लड़ने वाली हैं, दबी–कुचली स्त्रियों को कथाकार ने नहीं लिया है। वह उन स्त्रियों को लेकर चलती हैं। जिनके अंदर एक जज्बा है स्वयं को जितने हो सके उतने संघर्ष के बाद भी जीतने का –''मै वह दामिनी हूँ, उसने कहा, क्या कह रही हो तुम? सिंगापुर में जो औरत मरी, वो कोई और थी, दामिनी बच गई। किसी को पता नहीं चला, वह लौट आई दिल्ली, तुम कैसी बात कर रही हो, दामिनी नाम भी तो उसे और लोगों ने दिया था, उसका नाम तो कुछ और ही था, हाँ वह साहसी थी, कुछ कर सकती थी, लड़ सकती थी, एक जज्बा था, उसके भीतर अपने आत्मसम्मान को बचाने का। शहर और नाम दोनों बदलकर अपनी जिन्दगी नये सिरे से प्रारंभ की है मैंने।''[2]

वास्तव में अचानक पहली बार पढ़ने से उपन्यास 'वसु का कुटुम' एक बिल्डिंग और सरकारी राजनीति के भीतर छिपी गंदगी को दिखाता है, किंतु अगले ही क्षण वह स्त्री के स्वाबलंबन पर भी इंगित है। पढ़ने पर ऐसा लगता, जैसे उपन्यास दिल्ली दामिनी वाले बलात्कार की कथा को भी इंगित करता है। जिसमें अपने जीवन से हांथ धो बैठी लड़की के नाम पर शासन, प्र"ाासन काफी कुछ बोले, उसका राजनितिक मोड़ देने का प्रयास करते रहे। जिसमें एक स्त्री का सम्मान एवं अपमान मात्र एक कागज का मोहताज बनकर रह गया। रत्नाबाई इसमें आत्मसम्मान एवं बलात्कार पीड़ित औरत का के"ा लेकर पुलिस के पास जाती है, जिसमें एक स्त्री पुलिसकर्मी ही उसको मजाक बनाती है, स्वाबलंबन का अर्थ भी यहां परिवर्तित होता दिखायी देता है, जो सक्षम नारी है, वह किसी दूसरी औरत को न्याय देने के बजाय उसको प्रताड़ित करने की कथा रच रही है –''चलो दो बार कह देती हूँ, शुक्रिया, धन्यवाद और तीसरी बार सुनो, थैक्यू। मगर अब सवाल यह है कि परमी"ान लैटर को कॉपी तो वो लेकर आया नहीं, तीन–चार बार याद दिला चुकी। पुलिस वालों से तो मैं कई बार ि"ाकायत कर चुकी हर बार जब पुलिस वाला इनके पास जाता है बेपर्दगी और दरिंदगी से खुल्लमखुल्ला काम चालू रखते। फिर कोई कैसे बात करे अपने आत्मसम्मान की, इनको स्वाबलंबी का मायने हो पता तो काहे यह हो।''[3]

मृदुला जी का साहित्य उनके चिन्तन से उपजा है। लेखक का चिन्तन उसकी साहित्यिक कृतियों में फूट पड़ता है, झलकता है। मृदुला जी की जीवन विषयकदृष्टि, साहित्य विषयक दृष्टि, समाज और राजनीति विषयक मान्यताएँ, स्त्री के बारे में मत, आलोचना सम्बन्धी विचार इत्यादि को जानकर हम उनके लेखकीय विचारधारा से परिचित हो सकते हैं।

इस संदर्भ में लेखकीय चिन्तन को जानने के लिए उनकी साहित्यिक रचनाओं का पठन, अध्ययन तो आवश्यक है, साथ उनके छिटपुट लेखों, उनकी विचारधारा को जाना जा सकता है। किंतु उनकी लेखनी ही सुदृढ़ता की परिचायक बनकर अवतरित होते है। हिन्दी का जितना लेखन महिला कलमकारों की विचारधारा से

उपजे हैं, उसके विम"ा के पहलु ऐसे आये हैं, जिस प्रकार समय अनुकूल व्यवस्था चल रही। वर्तमान में कामकाजी महिलाओं को अपने लिए अलग परे"ाान होना पड़ता है, घर–गृहस्थी में हैं, उनकी विपदाएं है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मृदुला गर्ग के उपन्यास स्त्री के आत्मसम्मान और स्वावलंबन की ओर बढ़ते कदमों को प्रेरित करते हैं। उनका लेखन यह दर्शाता है कि स्त्री को केवल बाहरी दुनिया से नहीं, बल्कि अपने भीतर के संघर्ष से भी जूझना पड़ता है, ताकि वह समाज में अपना सही स्थान पा सके। इन उपन्यासों में स्त्री के संघर्ष की गहरी व्याख्या मिलती है, जो उसे अपने अस्तित्व की पहचान दिलाने और समाज में समानता की ओर अग्रसर करने का प्रेरणा देती है। मृदुला गर्ग के उपन्यासों में स्त्री का आत्मसम्मान एक महत्वपूर्ण विषय है। उन्होंने दिखाया है कि महिला के लिए समाज में सम्मान की प्राप्ति केवल शारीरिक सुंदरता या पारंपरिक भूमिका निभाने से नहीं, बल्कि अपनी सोच, समझ और आत्मनिर्भरता से संभव है। उनकी नायिकाएँ इस आत्मसम्मान को बचाए रखने के लिए संघर्ष करती हैं, चाहे वह किसी पारिवारिक दायित्वों को निभाने के बीच हो या समाज में खुद को साबित करने के बीच। गर्ग ने स्त्री के स्वावलंबन की आवश्यकता को बखूबी प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों में स्त्री केवल दूसरे पर निर्भर रहने वाली प्राणी नहीं, बल्कि अपनी मेहनत, संघर्ष और दृढ़ता से अपनी पहचान बनाने वाली होती है। वे न केवल आर्थिक रूप से स्वतंत्रता की ओर बढ़ती हैं, बल्कि मानसिक रूप से भी आत्मनिर्भर बनती हैं। मृदुला गर्ग के उपन्यासों में यह दिखाया गया है कि समाज और परिवार की परंपराएँ महिला को किस तरह सीमित करती हैं। लेकिन उनकी नायिकाएँ इन बंधनों को तोड़कर अपनी पहचान बनाने की कोशिश करती हैं। वे अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती हैं, चाहे वह नौकरी हो या व्यक्तिगत स्वतंत्रता।

संदर्भ –

[1] मृदुला गर्ग – वसु का कुटुम, पृष्ठ 58
[2] मृदुला गर्ग – वसु का कुटुम, पृष्ठ 38
[3] मृदुला गर्ग – वसु का कुटुम, पृष्ठ 45